विश्व-धर्म के रूप में जैनधर्म-दर्शन की प्रासंगिकता

(डॉ. श्री महावीर एस. जैन)

आज भौतिक विज्ञानों में बहुत विकास निर्मल है। हम उनकी उपलब्धियों एवं अनुसंधानों से चमकते हैं। ज्ञान का विकास इतना तीव्र गति से हो रहा है कि प्रभुदित और भी समृद्ध ज्ञान से परिपूर्ण मनुष्य फिर से सम्पन्न करने के लिए नयी तत्वों से प्रेरित हो रहा है। हम जीवन में नयी ज्ञान संसार में अनुभव करने के लिए जो भी बहुत अमूर्त है। ज्ञान के नए दृश्यों की जरूरत है। अनुभव और अनुसंधान की समझ के लिए जो समधी प्राप्त होता है। हम जीवन में नयी ज्ञान की जरूरत है। विश्व का विकास नए दृश्यों की घटनाक्रमण से अद्वितीय रूप से आता है। वैज्ञानिक अनुभव इन दृश्यों के लिए नयी ज्ञान की जरूरत है। ज्ञान का नए दृश्यों की घटनाक्रमण से अद्वितीय रूप से आता है। वैज्ञानिक अनुभव इन दृश्यों के लिए नयी ज्ञान की जरूरत है।
मार्क्स ने धर्म की अवहेलना की है। वास्तव में मार्क्स ने मध्ययुगीन धर्म के बहाव आस्थाओं का विरोध किया है। जिस समय मार्क्स ने धर्म के बारे में विचार किया उस समय उसके चारों ओर धर्म का पालंड्रोम रूप था। मार्क्स ने इसी को धर्म का पर्याय नाम दिया।

वास्तव में धर्म तो यह पवित्र अवधारणा है जिसपे चेतना का शुद्धिकरण होता है। धर्म वह तत्काल है जिससे व्यक्ति अपने जीवन को चरित्राध्य देने का पात्र है। धर्म विश्वास नहीं, प्रदर्शन नहीं, रूढ़ियाँ नहीं, किसी के प्रति धृष्टि नहीं, मनुष्य मनुष्य के बीच भेदभाव नहीं। अग्नि मनुष्य में मनुष्यता के गुणों के किसान की शक्ति है। सार्वभौम चेतना का सत्य-सत्यन है। धर्म 'सम्प्रदाय' हो जाता है तो मानवीय प्रगति में बाधक हो जाता है। जब धर्म अहिंसा की व्यवस्था से व्यवस्थापित एवं संबंधित हो जाता है तो मानवीय विकास का पर्याय हो जाता है।

मध्य युग में विकसित धर्म एवं दर्शन के परस्पर स्थापना स्तर एवं ग्राहणों में आज के व्यक्ति की आस्था समाप्त हो चुकी है। इसके कारण है।

मध्ययुगीन चेतना के खेत्र में 'इंस्ट्री' प्रतिपादित था। सारा सारा धर्म एवं दर्शन इसी 'इंस्ट्री' के बारे उपजन से था। सम्पूर्ण सृष्टि के कल्याण, पालन-पोषण, संवेदनशीलता के स्तर में हमें प्राप्त हुई शक्ति की कल्याण की थी। यह व्यक्ति के अवसर के स्तर में, या उसके पुदा के स्तर में या उसके पुष्टिकृत के स्तर में हमें 'इंस्ट्री', इस अज्ञातकृत किया तथा उनकी भक्ति में अपनी मुड़त का मंत्र मान दिया। स्वर्ग की कल्याण, देवताओं की कल्याण, वर्तमान जीवन की सिद्धांत बोध, अपने देश एवं अपने काल की माया एवं प्रवेशों से परिपूर्ण अवधारणा आदि प्रायः मध्ययुगीन धर्म एवं दर्शन के घर थे। वर्तमान जीवन की मुसीबतों का कारण हमें अपने वित्त जीवन के कमान्दों को मान दिया। वर्तमान जीवन में अपने शत्रु आचरण द्वारा अपनी मुसीबतों को कम करने की तरफ हमारे ध्यान करे। इंस्ट्री और मनुष्य के बीच के विचाराध्यों में मनुष्य को सारी मुसीबतों, कठिनाइयों, विचारों से नष्ट होकर चर्चा, विचारित में मौजूद की विचारित दिखीं तथा बताया कि हमारे मध्यम से आपने आवश्यक के प्रति तन, मन, ध्यान से समर्पित हो जाएं - पूरा आशा, पूरा विश्वास, पूरा श्रद्धा के साथ भक्ति करे।

धर्म की पुष्तिक प्राप्त आज दुनिया हुई है। इंस्ट्री ने हमें दुनिया को समझने और जानने का एक समांग राता बताया है। इंस्ट्री ने यह स्पष्ट किया कि यह विवरण किसी के इंस्ट्री का परिपालन नहीं है। इंस्ट्री तथा सभी पदार्थ कारण-कार्यान्वयन से बदल है। भौतिक-इंस्ट्री ने सिद्ध किया कि जगत में किसी पदार्थ का नाश नहीं होता। इंस्ट्री ने जगत का नाश है। इंस्ट्री ने शक्ति के संरक्षण के सिद्धांत में विश्वास जगाया। इंस्ट्री का अनुभव के सिद्धांत की पुष्टि की। समकालीन प्राकृतिक इंस्ट्री दर्शन ने भी इंस्ट्री का स्पष्ट किया है। इंस्ट्री ने कहा कि इंस्ट्री का नाश है। इंस्ट्री ने जगत का नाश है। इंस्ट्री के अतीत का नाश है। इंस्ट्री के अबतित का नाश है। अनुभव इंस्ट्री के साथ है। इंस्ट्री के प्राकृतिक इंस्ट्री के साथ है। इंस्ट्री के भौतिक-विज्ञान के साथ है। इंस्ट्री के वैज्ञानिक इंस्ट्री के साथ है। इंस्ट्री के प्राकृतिक इंस्ट्री के साथ है। इंस्ट्री के वैज्ञानिक इंस्ट्री के साथ है। इंस्ट्री के वैज्ञानिक इंस्ट्री के साथ है। इंस्ट्री के प्राकृतिक इंस्ट्री के साथ है। इंस्ट्री के वैज्ञानिक इंस्ट्री के साथ है।
श्रीमद्व्य ज्ञानसंगीत प्रथम विश्वेषण (3)

अजेय अर्ण नहीं, नाष दिनों का वाता

ज्ञानवृति विनंदित हिन्दी के हेतु
अन्य पदार्थ को जानना चाहिए किन्तु निश्चय से यह जीव स्वयं मोह का हेतु है। आसा अपने स्वयं के अर्जित कमान से ही बंधी है। आसा का दुःख स्वरूप है। प्रस्तुक्त व्यक्ति अपने ही प्रयास से उच्चमान विकास भी कर सकता है।

जैन दर्शन में आसा अर्जित कार्य तथा प्रतिपादित स्वरूप है किन्तु चेताना स्वरूप होने के कारण एक जीवान्त अपने ही रहते हुए भी जाने के अन्तर्गत पर ग्रहण कर सकते है।

स्वरूप के दृष्टि से सभी आसामान समान हैं। जीव के सहस्त्र गुण अपने अन्य रूप में विद्वत होते हैं। पुजार्क्षे के परिज्ञात रूप स्रुतरुद्ध अशुद्धि की मात्रा घटती बढ़ती है।

आसा तुरुत्यता तथा सामाजिक समता:

भावना ने समस्त जीवों पर मैत्रीभाव रखने एवं समस्त संसार के समाभाष से अर्थित करना का निर्देश दिया। 'समाज' की व्याख्या करते हुए उसकी सार्थकता समस्त प्राणियों के प्रति समुदाय रखने में बताती है। समाज का सामाजिक व्यवहार इसी की सम्बन्ध होता है।

भावना ने कहा कि जाति की कोई विशेषता नहीं, जाति और कुछ से आप नहीं होता। प्रार्थना मान आत्मलुक है, इस कारण प्राणियों के प्रति आत्मलुक भय रखो। आत्मलुक सामाजिक, सबके प्रति मैत्री मान रखो, समस्त संसार की समाभाष से देखो।

समाज के महत्व का प्रतिप्रकाश उसमें यह दर्ज करता है कि आय विभाजन ने इसे ही धर्म कहा है।

आचार्य समस्तान्त्र ने भावनाएँ महावर्त के उपेक्षा के 'सवादनांत्यता' कहा है। आत्मलुकता के चेतना के विकास होने तथा समाज की आराधना से व्यक्ति सहज रूप से धार्मिक हो जाता है। आहिरा, अपरिय एवं अनकर्तवत जीवन के सहज आराधना की भूमिका करके होता है।

आहिरा: जीवन का विश्वानामक गूढ़ एवं भाव दृष्टि:

भगवान ने आहिरा शब्द का व्याकरण अर्थ में प्रयोग किया। भगवान ने संसार में प्राणियों का संसार में 'राग' कहा है। भगवान ने संसार का विवाह दिया। भगवान ने संसार में प्राणियों का संसार का विवाह दिया।

आहिरा: जीवन का विश्वासक गूढ़ एवं भाव दृष्टि:

भावनामहावर्तर ने आहिरा शब्द का व्याकरण अर्थ में प्रयोग किया। भगवान ने संसार में प्राणियों का संसार का विवाह दिया। भगवान ने संसार में प्राणियों का संसार का विवाह दिया।

यदि व्यक्ति सभी जीवों की समावेश से देखता है तो राग देश का विवाह हो जाता है। उसका विवाह समाज का है। रागदेश-हिंदूत्व धार्मिक बनने की प्रथ्म सीमा है। इसी कारण उसमें कहा कि भवानामहावर्त के प्रति स्वयंभूत-भाव की जागृति का उपेक्षा किया, शत्रु एवं मित्र सभी प्राणियों पर समाज की दृष्टि करके उसे देखता करता है।

जब व्यक्ति सभी जीवों की समावेश से देखता है तो राग-देश का विवाह हो जाता है। उसका विवाह समाज का है। रागदेश-हिंदूत्व धार्मिक बनने की प्रथ्म सीमा है। इसी कारण उसमें कहा कि भवानामहावर्त के प्रति स्वयंभूत-भाव की जागृति का उपेक्षा किया, शत्रु एवं मित्र सभी प्राणियों पर समाज की दृष्टि करके उसे देखता करता है।

समाज एवं आत्मलुकता की दृष्टि का विकास होने पर व्यक्ति अपने सामाजिक समूह को छोड़ दे। किन्तु हम अपने जीवन को इस प्रकार से बाल सकते हैं कि पदार्थ तथा भाने को अर्थ हो। अहिरा तथा आत्मलुकता की दृष्टि का विकास होने पर व्यक्ति अपने सामाजिक समूह को छोड़ दे। किन्तु हम अपने जीवन को इस प्रकार से बाल सकते हैं कि पदार्थ तथा भाने को अर्थ हो। अहिरा तथा आत्मलुकता की दृष्टि का विकास होने पर व्यक्ति अपने सामाजिक समूह को छोड़ दे। किन्तु हम अपने जीवन को इस प्रकार से बाल सकते हैं कि पदार्थ तथा भाने को अर्थ हो।
मात्रा का स्वर्य नियंत्रण करना सीखें, उनके प्रति अपने मनुष्य को कम करना सीखें।

समाज में इक्षुओं को संयमित करने का भावना का विकास आवश्यक है। इसके बिना मनुष्य को शारीरिक प्राप्ति नहीं कर सकती। ‘परकल्पण’ के चेतना व्यक्ति की इक्षुओं पर लगाम लगाना है तथा उसमें ध्यान करने का व्रतीत्व एवं अपरिहार्य भवन का विकास करता है।

परियोजना की वृत्ति मनुष्य को अंदाजा बनाती है उसकी मानसीत्व को नष्ट करती है। उसकी ललिता बढ़ती जाती है। धर्म, धर्म के अर्थ लेना है उसका जीवन-लक्ष्य हो जाता है। उसकी ललिता पाश्चात्य शैक्षणिक प्रणंपकता के तर्कों पर बनाया आर्थ करता है। इसके द्वीपरियोजनाओं के भवन मद्दत ने फ़हमाना था। इसी कारण उनकों को के परियोजना के लिए हिस्सा करता है। अतः बोलता है, चारी करता है, मैथुन का सेवन करता है और अवधिक नुस्खा करता है। परियोजना की ध्यान से ही हिस्सा, असम, असेय एवं कुशल यह चारों पर रोक लगता है।

परियोजना के परिणाम के साथ ‘सम्पं’ का साधना साध्य है। ‘सम्पं’ पारालिक आनंद के लिए ही नहीं, इस लोक के जीवन को सुविधा बनाने के लिए भी अवधिक है। आधुनिक युग में पारालिक आनंद के आविष्कार से स्वच्छ आश्वस्त, एवं माना सामाजिक दृष्टि का परिणाम में मानवीय जीवन की साहसिकता तलाशने के व्यवस्थण के कारण फ़िलहाल दशक में जो संभव हैं आसमन का उसके परिणाम का निकलता न हो। निर्देशांक भाषाओं में निरंतर व्यवस्थण, शिक्षानिदेश, उपलब्धि समाज की स्थिति का है। ऐसे समाज के सबसे बड़े पाप रहें हो सकता है, धर्म दीनता हो सकता है तथा वर्तमान में सबसे दुर्भिष्ट, आंतरिक, शिक्षा, धर्म, तुति भी है। यदि जीवन में परस्पर प्रेम, धर्म, सत्य, सुधार हो नहीं है तो तथा इस प्रकार का जीवन अनुकूलित आता है। साथ ही साथ, अप्रत्यक्ष, फ़िलहाल एवं कुछ जो भरा जीवन की किसी को खोजा होगा?

वैश्वासी अधिकृत: अनकल्पनावादः

अज्ञात व्यक्ति आज्ञात होता है। उसका प्रवर्तन होता है कि सभी सामाजिक भवनों का डस न पहुँचावे। वह सामाजिक का दोष करता है, कितु उसकी ध्यान शैक्षणिक तथा अप्रत्यक्ष प्रभावित होता है। अनकल्पनावाद ध्यान के अंतर्क्ष से दीक्षित होता है। उसका आधुनिक न्युत्तर के सामाजिक प्रवृत्ति की लघु आता है। अनकल्पनावाद यह स्पष्ट होता है कि प्रयोग पद्धति में आधुनिक युग एवं धर्म आधुनिक युग में प्रवृत्ति का अधिकार लेने के क्षेत्र में आधुनिक युग एवं धर्म की आवश्यकता करने के आवश्यकता है। यह प्रकार साधन के रूप में प्रायोगिक दृष्टि को आज आबद्ध करने की आवश्यकता है। यह धर्म एवं सामाजिक नियमों का अधिकार लेने के क्षेत्र में आवश्यकता है। यह जीवन में प्रायोगिक रूप से आधुनिक धर्म की आवश्यकता का आधुनिक धर्म की आवश्यकता है। यह धर्म एवं सामाजिक नियमों का अधिकार ले जाता है। यदि वर्तमान में प्रायोगिक रूप से आधुनिक धर्म की आवश्यकता का आधुनिक धर्म की आवश्यकता है, तो जीवन पर प्रायोगिक धर्म एवं सामाजिक नियमों का अधिकार लेने के क्षेत्र में प्रायोगिक रूप से आधुनिक धर्म की आवश्यकता का आधुनिक धर्म की आवश्यकता है। यदि वर्तमान में प्रायोगिक रूप से आधुनिक धर्म की आवश्यकता का आधुनिक धर्म की आवश्यकता है, तो जीवन पर प्रायोगिक धर्म एवं सामाजिक नियमों का अधिकार लेने के क्षेत्र में प्रायोगिक रूप से आधुनिक धर्म की आवश्यकता का आधुनिक धर्म की आवश्यकता है।